तेरे सपनों के महल

कहानी/शरोवन

***

‘अमलतास ने जिन्दगी की जब हरेक सांस, रजनी के साथ समाप्त करने की कसम खाई थी तो फिर ऐसा अचानक से क्या हो गया कि सांसे समाप्त न हुईं, कसम जरूर टूट गई और रिश्ते भी बदलते देर नहीं लगी। रजनी ने अमलतास को ताश के पत्तों की बाज़ी में तो जीत लिया पर जिन्दगी में उसे हासिल करने से इनकार क्यों कर दिया ?’

.....

‘ऐ अमल, पत्ते खेलेगा मेरे साथ?

‘हां, लेकिन एक शर्त पर।’ अमल रजनी को देखता हुआ उसके सामने बैठता हुआ बोला।

‘कैसी शर्त?’ रजनी ने अपनी बड़ी बड़ी गोल आंखों से देखते हुये एक संशय से पूछा।

‘यही कि, अगर मैं हारता हूं तो तुम मुझे ले लेना, और यदि तुम हारती हो तो मैं तुम्हें ले लूंगा।’

‘हूं!’

रजनी ने सारे ताश के पत्ते अमल के मुंह पर दे मारे और उठकर चलती बनी। यह कहते हुये,

‘बड़े होशियार बनते हो न?’

अमलतास रजनी को मुस्कराता हुआ देखता ही रह गया।

अचानक ही सागर की भटकती हुई लहरों ने अमलतास के नंगे पैरों से बालू के बोझ को हटाते हुये स्पर्श किया तो उसके सोच की एक लंबी धारा को टूटते देर भी नहीं लगी। क्षण मात्र में ही

वह अतीत की धुंध से निकलकर वर्तमान में आ गया। शाम डूब रही थी और डूबते हुये सूर्य की दम तोड़ती हुई रश्मियां विशालकाय सागर के पेट पर पिघली हुई चांदी बरबाद कर रहीं थीं। साथ ही सागर की लहरों से मौज-मस्ती करते हुये अर्धनग्न जोड़े अपने बदन को ढांकते हुये वापस होने लगे थे। मगर अमलतास अभी भी बैठा हुआ था। बिल्कुल अपनी पूर्व मुद्रा में। संध्या चार बजे अपने काम की समाप्ति के पश्चात वह घर गया था। फिर वहां से प्रतिदिन की डाक निकालकर देखी थी। फिर जब डाक में उसे रजनी के विवाह का कार्ड मिला था तो उसे देखकर उसका मूंड तो खराब हुआ ही था, पर उससे अधिक उसे अपनी तकदीर पर अफसोस से ज्यादा गुस्सा भी आ गया था। रजनी भारत में रहनेवाले किसी डाक्टर लड़के से अपना विवाह करने जा रही थी, और वह लड़का इसी कारण अमरीका भी आ रहा था। अमलतास को गुस्सा भी ऐसा आया कि वह यही सोचने पर विवश हो चुका था कि, क्यों उसने इस संसार में जन्म लिया है? क्यों वह पिछले पन्द्रह सालों से एक बिगड़ी हुई मशीन के समान काम करता रहा? किसके लिये वह विदेश आया था? क्यों उसने परि्रम करके अपना यह घरबार और रहने का एक घरौंदा बनाया? क्यों उसने यह सब कुछ एकत्रित किया है? रजनी को जब यही सब कुछ करना था, इसी तरह से उसे उसको इस्तेमाल करना था तो वह सीधे से भी कहती तो क्या वह उसकी सहायता नहीं करता? क्यों उसने उसे एक भूल में ही रखा था? इसकदर वह उसे अपने विश्वास में रखे रही कि पिछले वर्षों में उसने इस लड़की के सिवा किसी दूसरी की तरफ एक बार देखने की आवश्यकता भी नहीं समझी थी। तब से वह यही सब सोचता हुआ घर से निकलकर सीधा यहीं सागर के किनारे आकर बैठ गया था। बैठे हुये वह अपने अतीत की उन घटनाओं को फिर एक बार दोहरा गया था, जिनका उसके जीवन से सांस और धड़कन जैसा रिश्ता कायम हो चुका था।

वह अपने स्थान से उठा। एक बार सागर की मद-मस्ताती लहरों को देखा। देखा तो वह यह समझ नहीं सका कि कौन झूठा हो सकता है? किसने उसे फरेब दिया है? सागर की छेड़छाड़ करती हुई उन लहरों ने जिन्हें वह रजनी की मधुर स्मृतियों के सहारे बहुत प्यार से अक्सर ही निहारा करता था, या फिर स्वंय रजनी ने? वही रजनी जिसने एक दिन उसे बातों-बातों में ताश के पत्तों की बाज़ी के साथ जीत लिया था। फिर जब वह कोई निर्णय नहीं ले सका तो समुद्र की लहरों को एक विछोह की भावना से देखते हुये अपने हाथ में पकड़े हुये स्मार्टफोन को उसने दूर लहरों में ही फेंक दिया। यही सोचकर कि स्मार्टफोन में रजनी के द्वारा भेजे हुये सन्देश, उसकी प्यारी-प्यारी मुस्कराती हुई तस्वीरें, उसके द्वारा किये गये प्रेम के वे झूठे वादे और कसमें जिनमें उसकी ज़रा भी हकीकत साबित नहीं हो सकी थी, आज सदा के लिये सागर के गर्भ में दफन कर चुका था।

सागर की बालू, लहरों के द्वारा हर समय चूमते हुये किनारों को छोड़कर वह काफी रात में घर में पहुंचा। घर में अपने कमरे में पहुंचते ही उसने सबसे पहले रजनी की तमाम तस्वीरों को

निकालकर फाड़ डाला। प्रेम में मढ़ी हुई रजनी की मुस्कराती हुई तस्वीर को एक बार देखा, फिर उसे तोड़कर सारे कांच के टुकड़े कूड़ेदान में झोंक दिये और फिर एक कटे हुये वृक्ष के समान अपने बिस्तर पर गिर पड़ा। .ज़िन्दगी की तमाम तिनके-तिनके बीनकर संजोयी हुई आस्थाओं पर जब अविश्वास और फरेब की कैंची अचानक से चल जाये तो अंजाम तो कुछ ऐसा ही होना भी था। अमलतास जब तक दुनियां के इस चलन को समझ पाया तब तक वक्त की आंधी ने उसके हाथ की हथेली से सब कुछ छीनकर फेंक दिया था। वह जानता था कि अपने जिन प्यार के नगमों के एहसास चुरा-चुराकर उसने मुहब्बतों के महल खड़े किये थे, उनकी कुछेक राहतों की बरबादी करके रजनी ने सारे जज़बातों का सौदा बहुत आसानी से कर लिया था। और इन सबका अंजाम भी ऐसा हुआ कि अब उसको दुनियां की हर लड़की में रजनी की फरेबी आंखों की चमक दिखाई देने लगी थी। अमलतास सोचते-सोचते अपनी .ज़िन्दगी के उस मुकाम पर जा पहुंचा जहां पर अतीत की किताब ने उसके जिये हुये दिनों को फिर एक बार दोहराने पर विवश कर दिया था . . .'

बचपन से ही एक साथ खेलते, लड़ते और पढ़ते हुये जब दोनों ने एक दिन इण्टर कॉलेज की दीवार फांदकर कॉलेज की चारदीवारी में प्रवेश किया तो दोनों के शरीरों की लंबी होती हुई परछाइंया भी एक दूसरे के दिलों में झांकने लगीं। इस बात का फिर ऐसा प्रभाव हुआ कि दोनों ही आपस में अवसर मिलते ही एक दूसरे के जज़बात चुराने लगे। रजनी अमलतास को जब भी देखती तो अमलतास उसमें यह अजीबो-गरीब निमंत्रण उसके उन भविष्य के सपनों के महल एकत्रित करने का था, देखा करता था, जिनमें वह उसके साथ जीवन का बहुत ही महत्वपूर्ण सफर गुज़ारने का सपना देखने लगी थी। दोनों के दिन इसी प्रकार से व्यतीत हो रहे थे। बचपन से ही स्कूल जाते हुये अब दोनों साथ ही कॉलेज जाते, साथ ही कॉलेज से वापस आते, दोनों अपनी-अपनी परेशानियां, मुश्किलें एक साथ ही मिलकर साझा करते और साथ ही हल भी कर लिया करते थे। दोनों का समय जहां एक साथ कॉलेज में मिल-बैठकर पढ़ते हुये साथ ही बीतता वहीं कॉलेज से वापस आने के पश्चात भी मुहल्ले में भी लगभग साथ ही गुज़र भी जाता था।

धीरे-धीरे समय और भी गुज़र गया। मौसम बदले। गर्मी पड़ी और लोगों के पसीने निकालकर चलती बनी। बारिशें सावन का बोझ लेकर आईं और कहीं भिगोकर तो कहीं बाढ़ें देकर लौट गईं। इसी तरह से महीने, और साल बीत गये। कॉलेज बंद हुये और गर्मी की छुट्टियां भी हो गईं। रजनी और अमलतास इन गर्मी की छुट्टियों में बैठ कर भविष्य के सपनों के महल बनाने लगे। इसी तरह दोनों एक दिन गर्मी के कारण अपने घर के बाहर एक नीम के वृक्ष के नीचे बैठे हुये थे। अमलतास के हाथों में ताश के पत्ते थे। अक्सर ही लोग इन गर्मी के दिनों में घरों से बाहर

निकलकर बैठ जाते थे। समय बिताने के लिये कोई ताश के पत्तों में समय बिताता था तो कोई यूं ही गपशप करते हुये।

'ऐ रजनी। पत्ते खेलेगी मेरे साथ।' अमलतास ने उसे देखते हुये पूछा।

'हां खेलूंगी, मगर एक शर्त है।'

'वह क्या?' अमलतास ने पूछा।

'अगर तुम हारते हो तो मैं तुम्हें ले लूंगी, और मैं हारती हूं तो तुम मेरी मर्जी से वहीं अपना विवाह करोगे जहां मैं चाहूंगी।' रजनी ने अपनी शर्त बताई तो अमलतास मुस्कराता हुआ उसके चहेरे की बड़ी-बड़ी आंखों में झांकने लगा। उसे तुरन्त कुछ दिनों पहले की वह बात याद आ गई जब इसी तरह ताश खेलने से पूर्व उसने रजनी से भी कुछ इसी प्रकार का प्रश्न किया था, और अब एक प्रकार से रजनी की बारी थी।

'ठीक है। मंजूर है।' कहते हुये अमलतास ने ताश की बाज़ी आरंभ की और पत्ते बांटने आरंभ कर दिये। और फिर कुछ ही मिनटों के पश्चात जब रजनी ने सचमुच बाज़ी जीत ली तो वह अपने ही स्थान पर उछलते हुये बड़े ही ज़ोर से चिल्लायी,

'तुम हार गये। मैं जीत गई?'

'मैं तो जानबूझ कर हारा हूं।' अमलतास ने अपनी हार स्वीकार करते हुये कहा तो रजनी बोली,

'झूठ मत बोलो। बड़े भोले बनते हो न?'

बाद में समय और गुज़रा। रजनी और अमलतास, दोनों की शिक्षा समाप्त हुई। दोनों को अब नौकरी की तलाश थी। रजनी तो नर्स के प्रशिक्षण के लिये चली गई और अमलतास एक कंपनी के कार्यालय में काम करने लगा। इस तरह से दोनों का अपना घर छूटा, अपने शहर से दूर हुये, खुद भी दूर रहने लगे, लेकिन फिर भी दोनों की बातचीत लगभग हर दिन फोन के द्वारा होती रहती थी। फिर इसी तरह से काम करते हुये जब समय और गुज़रा तो एक दिन अमलतास को अपनी कंपनी की तरफ से कंपनी की ही एक शाखा जो अमरीका में थी में काम करने का अवसर मिला तो वह विदेश में आकर नौकरी करने लगा। तब अमरीका आने से पहले अमलतास रजनी से बाकायदा मिला और उससे वायदा भी किया कि विदेश में समायोजित होते ही वह उसे भी

अमरीका बुला लेगा। इसी खुशी और रंज में तब रजनी अमलतास को एयरपोर्ट तक छोड़ने भी आई थी।

अमरीका आकर अमलतास ने अपनी ज़िन्दगी, यदि देखा जाये तो फिर एक बार नये सिरे से आरंभ की थी। अपने देश से दूर, विदेशी हवा, और चलन में समायोजित होते हुये, अपना घर और ठिकाना स्थापित करते हुये तथा दूसरे देश में वाकायदा अप्रवासन का प्रमाणपत्र हासिल करने में उसे पूरे सात वर्ष लग गये। मगर बाद में बहुत कोशिशों के बाद उसने रजनी को भी अमरीका बुलवा लिया। रजनी के अमरीका आने के पश्चात अपने शुरूआती दिनों में वह अमलतास पर ही निर्भर बनी रही, लेकिन धीरे-धीरे जब उसके भी पैर विदेशी भूमि पर मजबूत होने लगे तो पहले उसने नौकरी के बहाने अमलतास का शहर छोड़ा, फिर राज्य और बाद में वह उससे स्वत: ही कतराने सी लगी। मगर इतना सब कुछ होने पर भी रजनी से अमलतास की बात फोन पर हो ही जाती थी। विदेशी भूमि पर अपनी ज़िन्दगी को एक मशीन के समान व्यतीत करते हुये अब तक अमलतास को पूरे बारह वर्ष हो चुके थे, और अपनी उम्र और दिनों के हिसाब से यह समय था कि वह भी अपना घर बसा लेता। इसी आस और उम्मीद पर एक दिन अमलतास ने रजनी से बात करते हुये उससे अपने दिल की बात कही। वह बोला कि,

'रजनी, मैं चाहता हूं कि अब समय आ गया है कि मैं भी अपना विवाह कर लूं?'

'हां, हां क्यों नहीं? यह तो बड़ी ही खुशी की खबर सुनाई है तुमने। कोई लड़की वगैरह भी देखी है तुमने? रजनी ने एक साथ कई प्रश्न अमलतास से कर डाले।

'हां क्यों नहीं? लड़की देखी भी है और पसंद भी कर ली है।' अमलतास प्रसन्नता से बोला तो रजनी ने तपाक से पूछा। वह बोली,

'अच्छा। नाम तो बताओं ज़रा उसका? मैं फौरन ही उसे तुम्हारे लिये पसंद कर लूंगी। जैसा कि वर्षो पहले ताश की बाज़ी जीतते समय तुम्हारे सामने मैंने अपनी शर्त भी रखी थी।

'उस लड़की का नाम रजनी है।' अमलतास बोला।

'?' रजनी की आवाज़ अचानक ही बंद हो गई। वह गंभीर हुई तो कुछेक पलों के पश्चात अमलतास ही बोला,

'तुमने कुछ कहा नहीं?'

‘क्या कहूं? हमारी दोस्ती और मेरे अपनत्व को तुम इतनी गंभीरता तक ले जाओगे कि तुम मुझे ही अपनी होनेवाली बीबी की नज़र से देखने लगे हो?’

‘मैं तुम्हारी बात का मतलब नहीं समझा?’

‘मतलब साफ है कि, मैं तुमसे शादी नहीं कर सकती हूं।’

‘कारण जान सकता हूं?’

‘मैंने तुम्हें कभी भी उस नज़र से देखा ही नहीं है, जैसा कि तुम सोचते आये हो। यह ठीक है कि हम बचपन से एक दूसरे को जानते और समझते आये हैं, लेकिन . . .’

‘लेकिन क्या?’

‘मेरे भावी जीवन, मेरे सपने और सपनों के महल में छिपे हुये मेरे मन के स्पंदन बनाने में तुम एक महत्वपूर्ण भूमिका भी निभाओगे, इस हद तक तो मैं कभी भी गई ही नहीं थी। मुझे यह सुनकर बड़ा ही आश्चर्य हुआ है कि तुम मुझे बताये बगैर सदा से अपनी ज़िन्दगी के वे ख्वाब ही देखते रहे जिनमें मैं तुम्हारे साथ हमेशा के लिये आ जाऊंगी? सचमुच तुम बहुत ही भोले भी हो?’

‘?’ रजनी के मुख से ऐसी अप्रत्याशित बात सुनकर अमलतास फिलहाल कुछ भी नहीं कह सका तो रजनी ने ही बात आगे बढ़ाई। वह बोली,

‘अब ज्यादा सोचा-विचारी मत करो। मेरी तुमको सलाह है कि तुम कोई अच्छी सी लड़की देखकर अपना विवाह कर लो। बीबी घर में आयेगी तो धीरे-धीरे सब ठीक हो जायेगा। कहो तो मैं इसमें तुम्हारी कुछ मदद करूं?’

‘मुझे ज़िन्दगी की इतनी सख्त और कड़वी सज़ा देने से पहले मुझे मेरा कसूर तो बता दिया होता?’ कहकर अमलतास ने रजनी को फिर आगे कुछ भी बोलने का अवसर ही नहीं दिया और फोन को काट दिया। वह समझ गया था कि अपने जिन प्यार की कोमल हसरतों के सुर सजा-सजाकर उसने प्यार की जिन बेहद नाज़ुक आस्थाओं को जमा किया था, उन्हें रजनी ने बड़ी बेकद्री से किसी मवाली की दुकान पर जाकर कौड़ियों के दाम बेच भी दिया था। गुनगुनाती रातों में चन्द्रमा की रोशनी चुरा-चुराकर पिछले कई दशकों से उसने अपने प्यार के फूलों को जन्म दिया था, उसे क्या मालुम था कि उन्हीं फूलों को रजनी उसके ज़जबातों की ज़रा सी भी कद्र न करते हुये एक पल में उसकी झोली में उसके लिये सारी ज़िन्दगी के कांटे बनाकर बेदर्दी से भर

भी देगी? प्यार के मार्गों पर कदम से कदम मिलाकर चलनेवाली लड़की, राह चलते हुये अपने प्यार के जिन वादों और कस्मों का वास्ता देती है, हकीकत के धरातल पर उनमें ज़रा भी बज़न नहीं होता है, दुनियां के इस चलन को अमलतास बहुत अच्छी तरह से समझा ही नहीं, बल्कि महसूस भी कर चुका था।

रात पड़ रही थी। बाहर ख़ामोशी का आलम था। कभी-कभार घर के सामने से जाती हुई स्ट्रीट पर जब भी कोई कार गुज़रती थी तो पलभर के लिये अपने आने का एहसास भी करा जाती थी। चन्द्रमा की रात थी। आकाश पर ठहरी हुई बदलियों के साथ चांद कभी छिपता था तो कभी निकलकर चीड़ के वृक्षों की महीन-महीन पत्तियों से अपनी किरणों को छानने लगता था।

अमलतास अपनी .जिन्दगी की पिछली तमाम बातों को सोचता हुआ बिस्तर से उठा। उठकर उसने खिड़की का पर्दा हटाते हुये बाहर झांककर आकाश में चन्द्रमा को देखा तो उसे लगा कि चांद ने भी जैसे उसके हालात का मज़ाक बनाते हुये उसे अपना मुंह चिढ़ा दिया है। वह अपने कंप्यूटर के सामने आया और उसे खोला। फिर डेल्टा एयर लाइंस से अपने वतन वापसी की टिकट बुक कराई और फिर चुपचाप सिर पकड़कर बैठ गया। जिस देश में हरेक सुख-सुविधा और भौतिक जीने के सामान थे, पर दिल की शांति, चैन और अमन की सांसे लेने की जगह ही नहीं थी, जिस विदेशी भूमि पर उसका प्यार, दम तोड़ती हुई सांसों के साथ हर पल मरा था, जिस देश की मौसमी हवायें तक उसके प्यार के अफसानों के गीत उसके लुटे हुये प्यार के मजाक के तौर पर गुनगुनायेंगी, उस देश में ठहरकर वह अब करेगा भी क्या? अपने प्यार की हसरतों को दूसरे की बाहों में खिलखिलाते हुये देखने से तो बेहतर होगा कि वह अपनी मातृभूमि पर तड़प तड़पकर ही दम तोड़ दे.

समाप्त.